>

Title: Need to ensure the compliance of proper standards in the production of Energy Drinks being sold in the country keeping in view its potential health hazards.

श्री दत्ता मेघे (वर्धा): सभापति महोदय, मैं एनर्जी ड्रिंक और स्वास्थ्य के बारे में सरकार को अवगत कराना चाहता हूं कि देश में एनर्जी ड्रिंक से सेहत पर जो परिणाम हो रहे हैं, उन पर अंकुश लगाना आवश्यक हो गया है। हमारे देश में विदेशी नकल के आधार पर किसी भी उत्पाद का बड़े से बड़ा बाजार बन जाता है। इसके पीछे कई कारण हैं जिनमें प्रमुख कारण हमारी युवा जनसंख्या है। इस कारण दुनिया के तमाम उत्पादकों की नजर भारत पर होती है। आकर्षक विज्ञापनों तथा कुशल मार्किटिंग के जरिए एनर्जी ड्रिंक हमारे युवाओं का पसंदिदा पेय बन गया है। इस पेय को अपनाने का एक और भी कारण है। इनके निर्माताओं का दावा है कि इस ड्रिंक को पीने से आदमी तरोताजा हो जाता है। आज एक आकलन के अनुसार एनर्जी ड्रिंक का बाजार लगभग तीन सौ करोड़ रुपये के आसपास का है और यह तेजी से बढ़ रहा है।

इस एनर्जी ड्रिंक ने कुछ गंभीर सवाल खड़े किए हैं। क्या वास्तव में यह पेय स्वास्थ्यवर्धक है? क्या इसके कोई साइड इफैक्ट्स नहीं हैं? विश्व में एनर्जी ड्रिंक को लेकर कई अध्ययन हुए हैं। अधिकतर अध्ययनों से यह पता चला है कि एनर्जी ड्रिंक स्वास्थ्यवर्धक नहीं हैं। वास्तव में इस ड्रिंक में कैफिन का उपयोग किया जाता है जिसका अति सेवन हानिकारक है। इस ड्रिंक में कितने प्रतिशत कैफिन होनी चाहिए, इस पर भी मतभेद है। अध्ययन से पता चला है कि एक लीटर एनर्जी ड्रिंक में 320 मिलिग्राम तक कैफिन होता है। कैफिन का इन पेयों में ज्यादा होना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि कैफिन उत्तेजना पैदा करता है। कैफिन का लगातार सेवन करना जानलेवा भी हो सकता है और इसके चलते ब्लड प्रैशर, दिल की बीमारियां और मस्तिष्क पर भी असर पड़ता है। कुछ ड्रिंक्स में ज्यादा चीनी उपयोग करने के कारण डीहाइड्रेशन की शिकायतें आई हैं। इसी के मद्देनज़र दुनिया के कई देशों में एनर्जी ड्रिंक पर अंकुश लगाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

फूड सेफ्टी एंड स्टैन्डर्ड अथॉरिटी ने जरूर कुछ कदम उठाए हैं, लेकिन वह पर्याप्त नहीं हैं। मेरा सरकार से निवेदन है कि वह एनर्जी ड्रिंक से होने वाले परिणामों को गंभीरता से ले और इनके उत्पादों पर सख्त मापदंड लगाए।